UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Drawing
Research Link - 167, Vol - XVI (12), February - 2018, Page No. 136-137
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

मिथला की लोक कला मधुबनी और उसका विकासशील महत्व

प्रस्तुत शोधपत्र, मिथला की लोक कला मधुबनी और उसके विकासशील महत्व के अध्ययन से सम्बंधित है। मधुबनी चित्रकला अपने मूलरुप में कला का वह रुप है, जिसकी उत्पत्ति क्षेत्र की महिलाओं द्वारा की गई है। इस विधा में सभी जाति की महिलाएँ सम्मिलित रहती हैं। इस देश की महिलाओं के पुरातन काल से स्वयं को विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों से जोड़े रखा है। इसका श्रेष्ठ उदाहरण प्रकृति, संस्कृति एवं मनुष्य के मन के बीच सम्बंधों में देखा जा सकता है। इस सृजनात्मकता में उन्हीं मूल तत्वों को सम्मिलित किया गया है, जो उसके आसपास के क्षेत्र में प्रचुरता से उपलब्ध है। इसके साथ ही यह आवश्यक है कि चित्रकला जिसमें लोक जीवन की झांकी मिलती है, उसे आज के बाज़ार और उपभोक्ताओं की जरुरतों से जोड़ा जाए, इसमें कला भी बची रहेगी और कलाकारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

लोक कला का जन्म, मानव जीवन के साथ ही हुआ। ऐसा माना जाता है कि लोक कलाएँ मानव जीवन का अभिन्न अंग हैं, जो प्राचीन काल से ही मानव की सहचरी के रूप हमेशा ही साथ रही हैं। ''लोक'' शब्द जाति, धर्म, वर्ण, सम्प्रदाय, नगर, ग्राम, शिक्षित, अशिक्षित, धनी, निर्धन के भेद से ऊपर उठकर व्यवहार करती है। जहाँ व्यक्ति स्वतंत्रता से आधुनिक कही जाने वाली वर्गीय दृष्टि का निषेध करती है।

भारत देश की अनेकता के समान ही भारत की लोककला ने भी इस देश की संस्कृति की पच्चीकारी को भी बड़े विस्तृत केनवास पर चित्रित किया है और इसका एक रूप 'मिथला' की चित्रकारी में में देखने को मिलता है, जो यहाँ के कलाकारों की काल्पनिक शक्ति के रूप में दिखाई देता है। मधुबनी चित्रकला की मूल भावना, वेदों एवं पुराणों से प्राप्त है। मुधबनी के भित्ती चित्र विभिन्न धार्मिक संस्कारों में उपयोग किए जाते हैं एवं यह चित्र विवाह समारोह के महत्वपूर्ण भाग होते हैं। साथ ही पर्व और त्यौहारों पर भी इस लोककला की एक विशेषता चित्रों पर भी आधारित है। यहाँ की स्त्रियों कोहबर में मनोयोग से चित्रित करती हैं, यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की स्त्रियों

तक चलती है। राम–सीता, राधा–कृष्ण एवं शिव–पार्वती की रचना तथा सूर्य, चन्द्र, जीवन की श्रेष्ठता के प्रतीक माने जाते हैं। कहीं मछली भी अवतार की प्रतीक मानी जाती है। इनके साथ मधुबनी की चित्र आकृतियों में पशु तथा पक्षी मानव कृतियों की अपेक्षा मधुबनी की चित्रकृतियों में पक्षी, मानव कृतियों की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक रूप से चित्रित किए जाते हैं। पशुओं में मुख्यतः गाय, हाथी, घोड़ा, बैल, हिरण, शेर आदि चित्रित किए जाते हैं। इनमें गाय तथा हाथी का चित्रण प्रमुखता से किया जाता है। बिन्दु–रेखा, फूल–पत्ती आदि को इनके शरीर पर अंकित किया जाता है, जिससे ये अलंकृत किए जाते हैं। हाथी को धन–धान्य एवं सम्पत्ति का प्रतीक माना गया है। उसके अतिरिक्त कछुआ तथा मछली को भी प्रमुखता से चित्रित किया जाता है। पक्षियों में चकोर, मोर, तोता, चिड़िया इत्यादि को चित्रित किया जाता है।

मधुबनी में आकृतियाँ निश्चित स्थान अनुपात में नहीं होती है, किन्तु लोककला के रूप में स्त्रि रूपा कृतियाँ समान दिखाई देती हैं। उनकी वेश–भूषा में स्त्री –पुरूष का रूप परिलक्षित होता है। अधिकांश मुखाकृतियाँ एक चश्मा या चश्मा बनाई जाती हैं। चेहरे पर

विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

प्रायः भाव शून्य होते हैं। वस्त्रों को विभिन्न रंग की पुनरावृत्ति से सजाया जाता है। रंगों के साथ कोई भी आकृति ऐसी नहीं होती है, जिसमें फल–फूल, वनस्पति का अंकन नहीं किया गया हो। कमल का फूल तथा गुलाब को प्रमुखता से बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त चित्राकृतियों को फूल–पत्तियों से लदी बेल–बूटों के रूप में बनाया जाता है। पृष्ठभूमि तथा हाशियों को भी वनस्पतियों व बेलबूटों से ही सजाया जाता है। ये चित्र सामान्यतः गहरे लाल, हरे, नीले, काले, हल्के पीले, गुलाबी, बंसती अथवा चावल के आटे आदि के होते हैं। यही रंग कार्य की लय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए ऊर्जा को जोड़ने वाली शक्ति लाल एवं सफेद रंगों में एवं हरितिमा प्राकृतिक पत्तियों एवं वनस्पतियों से सर्वथा उपयुक्त प्रदर्शित होते हैं।

विभिन्न जाति समुदाय के लोग अपनी रूचि के अनुसार चित्रों का चयन करते हैं। जैसे ब्राह्मण चटकीले रंग को वरीयता प्रदान करते हैं तथा कायस्थ मंद रंगों को चुनते हैं। हरिजन शैली के चित्रों में हस्त निर्मित कागज को गाय के गोबर से लीपते हैं, तत्पश्चात् लेखन करके रंग भरते हैं।

प्रारम्भ में घरों में ही रंग निर्मित करते थे। प्राकृतिक रंग पौधों से प्राप्त किए जाते थे, जैसे मेहन्दी की पत्तियां, फूल, बोगन बैलिया, नीम आदि। इन प्राकृतिक रंगों को केले से प्राप्त रेजिन एवं सामान्य गोंद के साथ मिलाया जाता है, जिससे चित्र बनाने की सतह पर रंग आसानी से चिपक सके और स्थिर रह सके। काला रंग मिट्टी के तेल के लेम्प से एकत्रित हुए धुँए को गोंद में मिलाकर बनाया जाता है। इसी तरह जली हुई ज्वार (अनाज) की राख को बैल फल से निकाली गई गोंद के साथ गाय का गोबर मिलाकर काला रंग बनाया जाता है।

हरे रंग को सेब के पेड़ की पत्तियों तथा बेल वृक्ष की पत्तियों से बनाया जाता है। लाल रंग को बनाने में गेरू, सिंदुर, लाख, इत्यादि का उपयोग किया जाता है। पीला रंग, चूना व हल्दी को वट वृक्ष की पत्तियों के दूध में मिलाकर बनाया जाता था। सफेद रंग को चावल के आटे से तैयार किया जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि मधुबनी या मैथिल के लोग पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर रहते हैं।

मधुबनी चित्रकला अपने मूलरूप में कला का वह रूप है, जिसकी उत्पत्ति क्षेत्र की महिलाओं द्वारा की गई है। इस विधा मे सभी जातियों की महिलाएँ सम्मिलित रहती हैं। इस देश की महिलाओं के पुरातन काल से स्वयं को विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों से जोड़े रखा है। इसका श्रेष्ठ उदाहरण प्रकृति संस्कृति एवं मनुष्य के मन के बीच सम्बंधों में देखा जा सकता है। इस सृजनात्मकता में उन्हीं मूल तत्वों को सम्मिलित किया गया है, जो उसके आसपास के क्षेत्र में प्रचुरता से उपलब्ध है।

शताब्दियों से लुप्तप्राय रही मधुबनी रही मधुबनी पेंटिंग बहुत बाद में विश्व में तुफानी ढंग से अवतरित हुई। चाहे जापान का एक्सपो 70 हो या नई दिल्ली या विश्व की विभिन्न शहरों में होने वाले सम्मेलनों में मधुबनी पेंटिंग की बहुत मांग है। चाहे विभिन्न पर्यटन

केंद्रों की सजावट हेतु वांछित हो या सुदूर आस्ट्रेलिया के संग्रहालयों में लगाई जानी हो या मधुबनी चित्रकला का हर स्थान पर महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न पश्चिमी देशों में ही नहीं, बल्कि कई समाजवादी देशों जैसे सोवियत रूस, हंगरी, पोलेण्ड, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों ने इन पेंटियों को अधिक खरीदा है। इन पेंटिंगों की प्रदर्शनी विश्व के अनेक भागों जैसे जर्मनी, फ्रांस, पोलेण्ड, डेनमार्क, कनाडा आदि देशों में सराही गई है। भारत में विभिन्न बड़े शहरों मुंबई, कलकत्ता, चेन्नई आदि में इनकी प्रदर्शनी बहुत सराही गई है। पश्चिमी देशों तथा यूरोप एवं अमेरिका में मिथिला की मधुबनी पेंटिंग एवं इन पेंटिंग की सजावट की गई विभिन्न उपयोगी सामग्री की अत्यधिक मांग है, जो पिछले कुछ समय से निरंतर बढ़ रही है।

संदर्भ :

(1) अग्रवाल, आर.ए. : कला के मूल तत्व।

(2) *वर्मा, डॉ.सुरेंद्र : भारतीय कला संस्कृति के प्रतीक।*

(3) *इंटरनेट।*

❁❁